इकाई 14 चित्रकला और ललित कलाएं*

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 पृष्ठभूमि

14.2.1 पन्द्रहवीं शताब्दी में चित्रकला

14.2.2 आरंभिक मुगलकालीन चित्रकला

14.3 अकबर के शासनकाल में मुगल शैली का विकास

14.3.1 राजकीय चित्रशाला की स्थापना

14.3.2 शैली और तकनीक

14.3.3 मूलभूत विशेषताएं

14.4 जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में विकास

14.4.1 नयी शैलियों का उदय

14.4.2 विषयगत भिन्नताएं

14.4.3 अंतिम चरण

14.5 मुगल चित्रकला पर यूरोप का प्रभाव

14.6 ललित कलाएं

14.6.1 संगीत

14.6.2 नृत्य और नाटक

14.7 सारांश

14.8 शब्दावली

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

सांस्कृतिक मूल्य प्रायः चित्रकला और ललित कलाओं के माध्यम से प्रतिबिंबित होते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी में चित्रकला के विकास का उल्लेख कर सकेंगे,
- चित्रकला की विभिन्न शैलियों और तकनीकों पर प्रकाश डाल सकेंगे, और
- मुगल दरबार और अन्य प्रान्तीय राज्यों में संगीत, नृत्य और नाटक आदि ललित कलाओं के विकास को रेखांकित कर सकेंगे।

*प्रो. रवीन्द्र कुमार, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

यह इकाई हमारे पाठ्यक्रम **ई एच आई 04 चित्रकला और ललित कलाएं खंड 8, इकाई 34** का पुनर्प्रकाशन है।

14.1 प्रस्तावना

16वीं शताब्दी, खासकर इसके उत्तरार्द्ध में भारत में चित्रकला और संगीत के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। अकबर ने अपने शासन के दौरान ललित कलाओं के विकास को उदारतापूर्वक प्रोत्साहित किया। उसके उत्तराधिकारियों ने भी इन कलाओं में गहन रूचि दिखाई और 17वीं शताब्दी का अंत होते–होते मुगल दरबार में चित्रकला और संगीत अपने अभूतपूर्व उत्कर्ष पर पहुंच गया।

इसके साथ–साथ दक्खन में मुगल प्रभाव से काफी कुछ स्वतंत्र चित्रकला और संगीत की एक अलग परम्परा विकसित हो रही थी। बाद में, 18वीं शताब्दी में मुगल दरबार के स्थान पर राजस्थान और पंजाब जैसे क्षेत्रीय राज्य चित्रकला को संरक्षण देने लगे।

इस इकाई में हम चित्रकला और विभिन्न ललित कलाओं की इन विभिन्न परम्पराओं का अध्ययन करेंगे।

14.2 पृष्ठभूमि

इस खंड में हम मुग़ल पूर्व भारत में चित्राकल के विकास की चर्चा करेंगे जिसकी विस्तार से चर्चा **बी एच आई सी 107 की इकाई 19** में की गयी है।

14.2.1 पन्द्रहवीं शताब्दी में चित्रकला

अभी तक यह विश्वास किया जाता था कि दिल्ली सल्तनत में चित्रकला का विकास नहीं हुआ और मुगल काल में तैयार हस्तलिखित दस्तावेजों में प्राप्त चित्रकला की परंपरा वस्तुतः कई शताब्दियों के बाद (दसवीं शताब्दी के अंत के बाद) पुनः प्रारंभ हुई। एक प्रकार से यह चित्रकला का पुनरुत्थान था। परन्तु नई खोजों और शोधों से कुछ नये तथ्य सामने आये हैं:

- 13वीं और 14वीं शताब्दियों में भित्ति चित्रों की और कपड़ों पर चित्रकारी करने की जीवंत परंपरा थी,
- 14वीं शताब्दी तक कुरान की आयतों को चित्र रूप से प्रस्तुत करने की परंपरा साथ–साथ चल रही थी, और
- संभवतः 15वीं शताब्दी के आरंभ में फारसी और अवधी भाषा की पांडुलिपियों में चित्रकारी की परम्परा की भी जानकारी मिलती है।

15वीं और 16वीं शताब्दी में तैयार की गई कई महत्वपूर्ण पांडुलिपियों की हमें जानकारी मिलती है जिनमें चित्र भी बने है। इनमें से कुछ कृतियां क्षेत्रीय राजाओं के दरबार में तैयार की गई थी और कुछ का निर्माण स्वतंत्र संरक्षकों द्वारा करवाया गया था। पहली कोटि में निम्नलिखित की चर्चा की जा सकती है:

क) *सादी की बोस्तां* में हाजी महमूद के बनाए चित्र,

ख) *नेमत नामा* (पाककला की पुस्तक) और

ग) मोहम्मद शादिआबादी कृत *मिफताह अल फुज़ला*।

15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मांडू (मालवा) में इन पांडुलिपियों में चित्रों का समावेश किया गया था। लोरे चंदा (अवधी) इस प्रकार की चित्रित पांडुलिपि का उत्तम उदाहरण है जिसका संबंध दरबार से नहीं था बल्कि इसे अपने संरक्षक के लिए तैयार किया गया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारत में मुगलों के आगमन से ठीक पहले चित्रित पांडुलिपियों की परंपरा मौजूद थी। कागज के उपयोग के कारण इस प्रकार की चित्रकारी संभव हो सकी।

14.2.2 आरंभिक मुगलकालीन चित्रकला

भारत में मुगल शासन के संस्थापक बाबर (1526) ने केवल चार वर्षों तक राज्य किया। चित्रकला के विकास में उसका कोई योगदान नहीं रहा। उसके उत्तराधिकारी हुमायूं का भी अधिकांश समय अपने विरोधियों से लड़ते हुए बीता और 1540 में शेरशाह ने उसे भारत से बाहर खदेड़ दिया। अपने निष्कासन के दौरान वह ईरान के शाह तहमस्प के दरबार में रहा और वहीं चित्रकला के प्रति उसके रुझान का विकास हुआ। वह वहां की कला से इस कदर प्रभावित हुआ कि उसने ईरान के दो कलाकारों मीर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुस समद से अपने लिए पांडुलिपियां तैयार करने के लिए निवेदन किया। भारत लौटने पर हुमायूं उन्हें अपने साथ लेता आया।

मुगलकालीन चित्रकला के विकास में हुमायूं का योगदान महत्वपूर्ण है। हुमायूं के शासनकाल में मुगल चित्रकला की कई महत्वपूर्ण विशेषताओं का उद्‌भव हुआ। *तैमूर घराने के राजकुमार* शीर्षक से बनाया गया चित्र हुमायूं के काल की अनुपम देन है। यह 1550 ई. के आसपास बनाया गया था। इसे कपड़े पर बनाया गया है। इसकी लंबाई 1.15 वर्ग मीटर है। ईरानी चित्रकला में भी इतना लंबा चित्र मिलना अपवाद था। ऐसा माना जाता है कि यह मंगोल परम्परा की देन है जिसमें वे अपने तम्बुओं पर चित्र बनाया करते थे।

चित्र-1: नेमत नामा
साभार : https://commons.wikimedia.org//wiki/file:At-nama_(Book_of_Delicacies).jpg

14.3 अकबर के शासनकाल में मुगल शैली का विकास

अकबर का कलाओं के प्रति अत्यधिक रुझान था। मुगल चित्रकला का अन्य शैलियों से भिन्न एक अलग स्कूल के रूप में स्थान प्राप्त करना अकबर की इसी रुचि का परिणाम था।

चित्रकला पर अकबर के विचार

किसी चीज की प्रतिकृति बनाने को तस्वीर कहते हैं। महामहिम ने अपनी युवावस्था से ही इस कला के प्रति गहरी रुचि दिखाई थी और इसे सभी प्रकार का प्रोत्साहन दिया

था, क्योंकि वे उसे अध्ययन के साथ–साथ तृप्ति का साधन भी मानते थे। इस प्रकार यह कला फलने–फूलने लगी और कई चित्रकारों ने खूब नाम कमाया। दरोगा और लिपिक महामहिम के समक्ष प्रत्येक सप्ताह विभिन्न चित्रकारों के चित्र पेश किया करते थे, उसके बाद वे (अकबर) उन्हें उनके कार्य के अनुसार पुरस्कार देते थे या वेतन में प्रतिमाह वृद्धि करते थे। चित्रकारी के लिए आवश्यक सामग्री में (इस समय) काफी प्रगति हुई। इन सामानों का मूल्य बड़ी सावधानी से आंका जाता था। रंग के मिश्रण की तकनीक में विशेष रूप से विकास हुआ था। इस प्रकार चित्रों की बनावट में अभूतपूर्व विकास हुआ। इस काल में बेहतरीन चित्रकार हुए और उनकी उत्कृष्ट कलाओं को यूरोप के विश्वविख्यात चित्रकारों की रचनाओं के समक्ष रखा जा सकता है। सूक्ष्मता से चित्रण, सुंदर बनावट और उन्मुक्त प्रस्तुति आदि से इस युग की चित्रकला अतुलनीय हो गई, चित्रकारों ने जड़ पदार्थ में भी जीवन डाल दिया। इस युग में सैकड़ों चित्रकार चित्रकला के महारथी थे, अच्छे और उत्कृष्ट कलाकारों की संख्या काफी बड़ी थीं। यह बात विशेषतः हिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में सही है, उनके चित्र कल्पना के अनुपम नमूने हैं। पूरे विश्व में उन जैसे कम कलाकार ही पाए जाते हैं।

स्रोतः (अबुल फजल, आइन–ए–अकबरी)

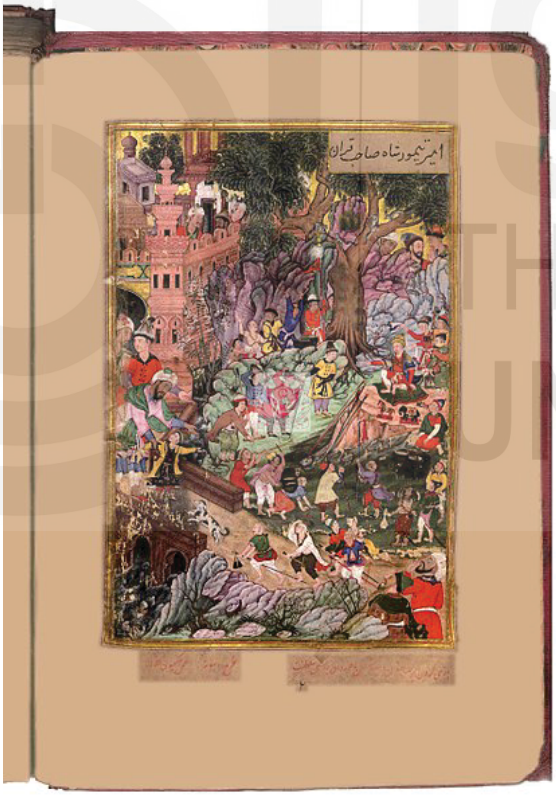

चित्र-2: तारिख–ए खानदान–ए तैमूरियां
साभार : https://commons.wikimedia.org//wiki/file:Childhood_of_Timur.jpg#file

14.3.1 राजकीय चित्रशाला की स्थापना

अकबर के शासनकाल में पहला प्रमुख पांडुलिपि चित्रण *हमजा नामा* की चित्रकारी थी। इसकी शुरुआत 1562 में हुई जिसके लिए कई दरबारी चित्रकार नियुक्त किए गए।

चित्रकारों के कार्य करने के स्थान को तस्वीर खाना कहा जाता था। हालांकि अबुल फजल ने केवल सत्रह कलाकारों का उल्लेख किया है, परन्तु हमारी जानकारी के अनुसार यह

संख्या काफी बड़ी थी। एस. पी. वर्मा (*आर्ट एंड मैटीरियल कल्चर इन द पेंटिंग्स ऑफ अकबर्स कोर्ट*, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978) ने अकबर की शिल्पशाला में काम करने वाले 225 कलाकारों की सूची तैयार की है। ये कलाकार कई जगहों से आए थे परन्तु इनमें हिंदुओं की संख्या अधिक थी। एक रोचक तथ्य यह है कि निम्न जाति के कलाकारों को भी उनकी प्रतिभा के आधार पर राजकीय कला का दर्जा दिया गया था। इस दृष्टि से पालकी ढोने वाले कहार के बेटे दसवंत का उल्लेख विशेष रूप से किया जाना चाहिए। कलाकारों की सहायता के लिए अनेक मुलम्मासाजी करने वाले और पृष्ठ तैयार करने वाले होते थे। कलाकार नकद वेतन प्राप्त कर्मचारी थे। एस. पी. वर्मा का मानना है कि शिल्पशाला में न्यूनतम वेतन 600 से 1200 दाम (40 दाम = 1 रूपया) था।

चित्र-3: बाबरनामा
साभार: https://commons.wikimedia.org//wiki/File:A_banquet_for_Babur.jpg

कुछ चित्रों पर दो चित्रकारों के नाम पाए गए हैं। यहां तक कि कभी–कभी तीन चित्रकार मिलकर चित्र बनाते थे। *अकबरनामा* का एक चित्र चार चित्रकारों ने मिलकर बनाया था। इस प्रकार चित्रकला एक सामूहिक कार्य के रूप में भी सामने आती है। चित्र का आरेख निर्माण और रंगाई, चित्रकारों के दो अलग–अलग समूहों द्वारा की जाती थी। जहाँ तीन कलाकार काम कर रहे होते थे, वहां एक कलाकार बाहरी रूपरेखा बनाता था, दूसरा इसके चेहरे को और तीसरा बाकी हिस्से को रंगता था। हमें इस बात का पता नहीं है कि वह जटिल कार्य किस ढंग से सम्पन्न होता था। संभवतः इस प्रकार के दल में आरेखन और रंगाई अलग–अलग कलाकारों द्वारा की जाती होगी।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है लिपिकों की सहायता से दरोगा शिल्पशाला की देखरेख करता था। कलाकारों को चित्रकारी का सामान उपलब्ध कराना और उनके कार्य की प्रगति

पर नजर रखना उसका मुख्य दायित्व था। वह समय–समय पर सम्राट के सामने कलाकारों की कृतियों को पेश किया करता था।

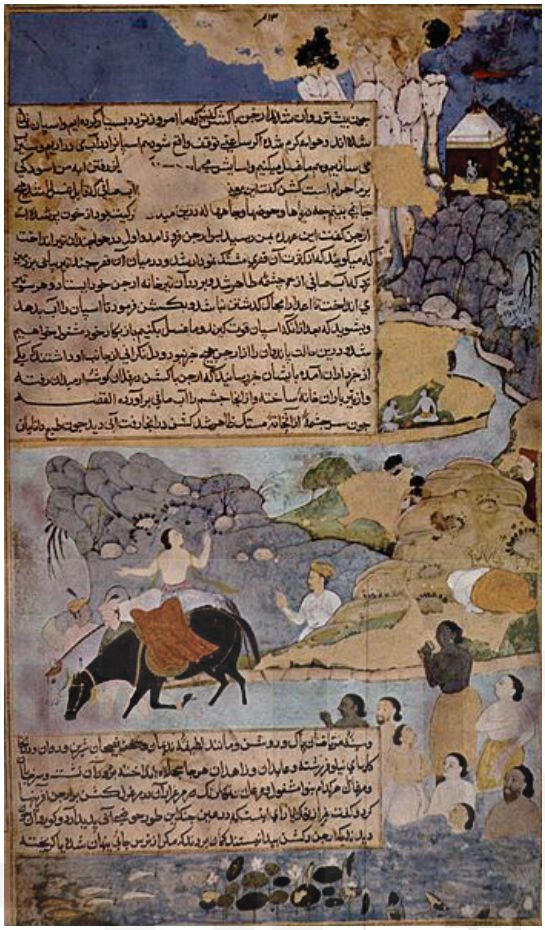

चित्र-4: रज़्मनामा
साभार: https://commons.wikimedia.org//wiki/File:Meister_des_Razm-N%C3%A2ma-Manuskripts_001.jpg

14.3.2 शैली और तकनीक

अकबर के दरबार में बनाए गए चित्र मुगल कला की प्रतिनिधि रचनायें हैं, परन्तु इस कला की शैली और तकनीक में बराबर विकास होता रहा। आरंभिक चरण के चित्रों पर ईरानी प्रभाव स्पष्ट है, जिसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- सममित संघटन,
- आकृतियों की प्रतिबंधित गतिशीलता,
- चित्रों की रेखाओं की उत्कृष्टता,
- स्थापत्यगत स्तंभों का सतही चित्रण, और
- भवनों का आलंकारिक चित्रण।

बाद में चित्रकला ने अपना एक विशेष स्वरूप निर्मित किया। मुगल कला का वह रूप ईरानी और भारतीय परम्पराओं से निर्मित हुआ, जिसमें यूरोपीय प्रभाव की भी थोड़ी बहुत झलक देखने को मिलती है।

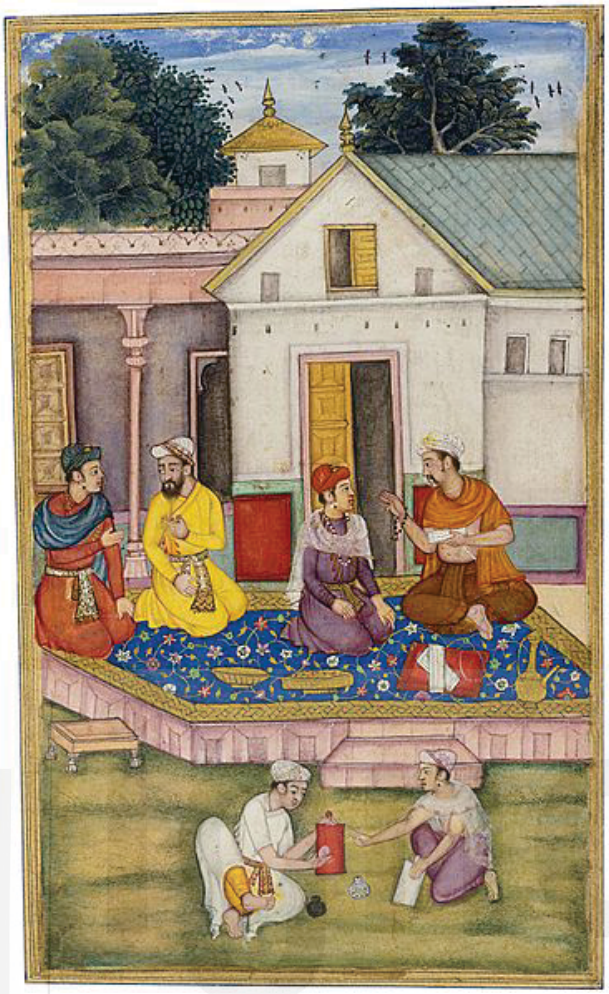

चित्र-5: रज़्मनामा
साभार: https://commons.wikimedia.org//An_illustration_from_a_Razmnama_manuscript.jpg

14.3.3 मूलभूत विशेषताएं

अकबर द्वारा शिल्पशाला स्थापित किए जाने के पन्द्रह वर्षों के भीतर मुगल शैली की अपनी पहचान बन गई। अगले एक दशक में अर्थात 1590 तक इसने एक विशेष स्वरूप ग्रहण कर लिया जिसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- प्रकृतिवाद और लय,
- प्रतिदिन प्रयोग किये जाने वाले भारतीय परिधानों का चित्रण,
- प्रमुख चित्र की पृष्ठभूमि में कई उप–दृश्यों का चित्रण,
- अभूतपूर्व क्रियाशीलता तथा अत्याधिक गतिशीलता, तथा
- फूल–पत्तियों और पेड़–पौधों का अद्भुत चित्रण।

यहां इस तथ्य पर बल दिया जाना चाहिए कि अकबर के काल में निखरी चित्रकला में भारतीय और ईरानी शैली का तो समन्वय था ही साथ ही साथ इसकी अपनी मौलिकता भी थी। इन चित्रों में गति और क्रिया का विशेष महत्व है जो न तो भारतीय पूर्व मुगलकालीन कला में मिलता है और न ही ईरान में ही ऐसी कला का प्रचलन था (*आर्ट एंड कल्चर*, सं. ए. जे. कैसर और एस. पी. वर्मा, जयपुर, 1993)।

चित्र-6: अकबरनामा
साभार: https://commons.wikimedia.org//wiki/File/:Episode_in_Karah._ Akbarnama._V%26A_Mus_IS_2.51-1896.jpg

अकबर के काल में बने चित्र ऐतिहासिक विषयवस्तु के कारण फारसी परम्परा के साथ–साथ भारतीय शैली से भी अपनी विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं। मुख्य रूप से प्रयुक्त दो विषयवस्तु हैं :

- दरबार की प्रतिदिन की घटनाओं का चित्रण, और
- छवि चित्रण।

हालांकि ईरान में छवि चित्रण बनाने की परम्परा थी, परन्तु ऐतिहासिक घटनाओं के चित्रण का आयाम बिल्कुल नया था। घटना ऐतिहासिक हो या चित्रकार की शुद्ध कल्पना, शिकार या युद्ध के दृश्यों का अंकन करते समय चित्रकार एक बने बनाए सूत्र का प्रयोग करता था, जैसा कि 1580 के आसपास चित्रांकित किए गए *तैमूरनामा* में किसी खास घटना का चित्रण करते हुए भी चित्रकार घटना से असंबद्ध दिखाई देता है। इसमें कलाकारों ने अपने मन में पूर्व स्थापित परिकल्पना के अनुसार किलों का आकार, नदी पार करने, दर्शकों अथवा युद्ध संबंधी दृश्यों का चित्रण किया है। *अकबरनामा* में भी कलाकारों ने इन दृश्यों की नकल की है या उन्हें अपने अनुसार ढाल लिया है। कोई दृश्य पहले से उपलब्ध न होने की स्थिति में चित्रकार ही एक दृश्य की योजना करता प्रतीत होता है और कुछ ही चित्रकार इस प्रकार के नूतन प्रयोग करने में सक्षम दिखाई देते हैं।

चित्र-7: जहांगीर का पोर्ट्रेट
साभार: https://commons.wikimedia.org//wiki/File/:15_Abu%271_Hasan_ Jahangir_ with_a_ Potrait_of_Akbar_ 1614%D0%B3_Musee_Guimet,_Paris_-%D0%BA%D0%BE% D0% B8% D1%8F.jpg

हमने यहां ऐतिहासिक क्रम में इस काल में चित्रांकित प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख किया है।

ग्रंथ	:	तिथि
हमजानामा	:	लगभग 1562–1580 ई.
अनवार ए सुहेली	:	1570 ई.
तूतीनामा	:	लगभग 1570–1580 ई.
तारीख ए खानदान ए तैमूरिया	:	लगभग 1570–1590 ई.
बाबरनामा	:	लगभग 1570–1600 ई.
अकबरनामा	:	लगभग 1570–1600 ई.
तारीख ए अल्फी	:	लगभग 1570–1600 ई.
रज्मनामा	:	1582 ई.

चित्र-8: शाहजहाँ का पोर्ट्रेट
साभार: https://commons.wikimedia.org//wiki/File/:Emperor_Shah_Jahan_1628.jpg

बोध प्रश्न 1

1) आरंभिक मुगल शासकों के अधीन चित्रकला के विकास पर 50 शब्दों में टिप्पणी कीजिए?

.....

.....

.....

.....

2) राजकीय शिल्पशाला में चित्रकारों द्वारा सामूहिक चित्रण की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) मुगलकालीन शैली की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

14.4 जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में विकास

जहांगीर और शाहजहां के काल में मुगलकालीन चित्रकला अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई। जहांगीर जब राजकुमार था तब से ही वह चित्रकारी में रुचि रखता था। अकबर की विशाल शिल्पकला से अलग उसकी अपनी चित्रशाला थी। जहांगीर शिकार के दृश्यों, पक्षियों और फूलों की चित्रकारी पसंद करता था। उसने छवि चित्रण की परम्परा भी जारी रखी। शाहजहां के समय की चित्रकारी में रंगों की चमक बढ़ गई और अलंकरण के लिए सोने का उपयोग होने लगा। आगे आने वाले उपभागों में हम जहांगीर और शाहजहां के शासनकाल में मुगल चित्रकला की नयी शैलियों और विषयगत विविधताओं का अध्ययन करेंगे।

14.4.1 नई शैलियों का उदय

जहांगीर के शासनकाल (1605–27) में छवि चित्रण की तुलना में पांडुलिपि चित्रण का महत्व कम हो गया। एम. सी. बीच (*मुगल एंड राजपूत पेंटिंग*, केम्ब्रीज विश्वविद्यालय प्रेस, 1992) के अनुसार जहांगीर चित्रकारी में व्यक्तिगत रुचि लेता था और उसका हस्तक्षेप राजकीय चित्रशाला के कार्यकलापों में भी था। स्पष्टतः कला संबंधी निर्णय स्वयं सम्राट के होते थे। परिणामस्वरूप, चित्रकला में वह अपने द्वारा प्रतिपादित शैली का समावेश कर सका। 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुगल चित्रकला की शैली में दो नये तत्व शामिल हुए। ये इस प्रकार हैं:

- जहांगीर की चित्रकला में रूपवादी शैली की प्रधानता है। इसमें चित्र को यथार्थवादी बनाने और समकालीन यथार्थ को हू–ब–हू चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है।
- इस काल के चित्रों में चौड़े हाशिए का प्रयोग किया गया, जिन्हें फूल–पत्तियों, पेड़–पौधों और मनुष्य की आकृतियों से भव्य रूप से अलंकृत किया गया है।

14.4.2 विषयगत भिन्नताएं

जहांगीर प्रकृति प्रेमी था। जब भी वह अनूठे जानवर या पक्षी देखता था तो उसका कलाकार मन तत्काल उसे चित्रित कराने के लिए बेचैन हो उठता था। उसके जमाने में पक्षियों और पशुओं का बड़ा ही जीवंत चित्रण हुआ है।

शाहजहां स्थापत्य कला का महान संरक्षक था, परन्तु उसने चित्रकला की भी उपेक्षा नहीं की। उसके समय में भी छवि चित्रण बनाये जाते थे, चित्रों का संग्रह तैयार किया जाता था और पांडुलिपि चित्रण बनाये जाते थे। इसके अलावा प्रणय दृश्यों और महिलाओं के चित्र भी बनने लगे। इस काल की चित्रकला में पशु के अध्यारोपण और कलाबाजी के दृश्यों को भी स्थान मिला।

14.4.3 अंतिम चरण

शाहजहां के उत्तराधिकारी औरंगजेब के काल में कलाएं उपेक्षित रहीं। चित्रकारी पूरी तरह रूकी नहीं, परन्तु इसे सम्राट का संरक्षण प्राप्त होना समाप्त हो गया और उसका क्षेत्रवादी स्वरूप मुखर हो गया। राजपूत राजाओं के दरबारों में कुलीनों और उनके संबंधियों के छवि चित्रण बनाए जाते रहे। चित्रकला संबंधी राजपूतों के अनेक दस्तावेज (तस्वीरखाना दस्तावेज) राजस्थान के राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में आज भी उपलब्ध हैं। वहां मुगल सम्राट के

अभियान संबंधी कुछ रोचक चित्र रखे हुए हैं। इन चित्रों में चित्रकार की कला उत्तम है, परन्तु अब चित्रकारी औपचारिकता मात्र रह गई और उसमें पहली जैसी जीवंतता नहीं रह गई।

बाद में मौहम्मद शाह (1719–48 ई.) के शासनकाल में प्रणय के आकर्षक दृश्यों की चित्रकारी शुरू हुई। परन्तु इस समय तक राजकीय चित्रशाला के अधिकांश चित्रकार प्रांतीय शासकों के दरबारों में जा चुके थे। मुगल कला के पतन से प्रांतीय शैली को लाभ पहुंचा।

14.5 मुगल चित्रकला पर यूरोप का प्रभाव

इस इकाई में पहले ही मुगल चित्रकला की मिली–जुली प्रकृति का उल्लेख किया जा चुका है। अपने बाद के चरण में, विशेषकर 17वीं शताब्दी के दौरान मुगल चित्रकला पर यूरोपीय कला का प्रभाव दिखाई देता है। मुगल चित्रकारों ने यूरोप की चित्रकला से विषयवस्तु के साथ–साथ तकनीक को भी अपनाया। ए. जे. कैसर के अनुसार मुगल चित्रकार यूरोपीय चित्रकला की नकल किया करते थे और कभी–कभी इसे पुनर्व्याख्यायित भी किया करते थे। इसके साथ–साथ यूरोप के चित्रकारों के चित्रों के संग्रह जहांगीर, दारा शिकोह और कई मुगल कुलीनों के पास मौजूद थे (ए. जे. कैसर, *इंडियन रेसपोंस टु यूरोपीयन टेक्नॉलाजी एंड कल्चर*, 1982)।

यूरोपीय चित्र जब मुगल दरबार में लाये गए तो आरंभ में बहुत से चित्रकार इसकी नकल करने को ओर प्रवृत हुए। समकालीन यूरोपीय यात्री बताते हैं कि इस प्रकार की नकल में एक प्रकार की सहजता थी। परन्तु मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय चित्रकला की विषयवस्तु को अपनाकर नए प्रयोग भी किए। मुगल चित्रकला में त्रिआयामी चित्रों का भी विशेष महत्व है। स्पष्टता इन पर यूरोपीय तकनीक का प्रभाव है। मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय चित्रकला के प्रकाश और छाया के प्रभाव को अंकित करने की शैली भी अपनाई। इनका उपयोग अधिकतर रात के दृश्यों के अंकन के लिए होता था। प्रभा मंडल, परों वाले देवदूत और गरजते बादलों का अंकन भी यूरोपीय चित्रकला के प्रभाव का प्रतिफलन था। परन्तु यूरोप की महत्वपूर्ण तैल चित्रकला की तकनीक की ओर मुगल आकृष्ट नहीं हुए। अतैव इस काल में तैल चित्रों का सर्वथा अभाव रहा।

14.6 ललित कलाएं

16वीं–18वीं शताब्दी में मुगलों के द्वारा शासित क्षेत्र की अपेक्षा प्रान्तीय क्षेत्रों में ललित कला का ज्यादा विकास हुआ, परन्तु ललित कलाओं के ऐतिहासिक विकास की सूचना कम ही मिलती है। आगे जो वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है, वह इधर–उधर बिखरी छुट–पुट सूचनाओं पर आधारित है।

14.6.1 संगीत

इस काल में क्षेत्रीय राज्य संगीत अध्ययन और विकास के केन्द्र बन गए। दक्षिण भारत में 16वीं शताब्दी के आसपास जनक और जन्य रागों जैसे मूल और मूलाश्रित रागों का प्रचलन था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख *स्वरमेल कलानिधि* नामक ग्रंथ से मिलता है। इसका लेखन 1550 ई. में कोडबिंदु (आन्ध्र प्रदेश) के रामामात्य नामक लेखक ने किया था। इसमें 20 जनक और 64 जन्य रागों का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् सोमनाथ ने 1609 ई. में *रागविबोध* की

रचना की जिसमें उत्तर भारत की कुछ शैलियों का समावेश किया गया है। 17वीं शताब्दी के मध्य में तंजाउर में बेंकटामकिन ने *चतुरबंडी प्रकाशिका* नामक एक प्रमुख विवेचना संगीत पर लिखी (लगभग 1650 ई.)। यह पुस्तक कर्नाटक संगीत का आधार ग्रंथ बन गई।

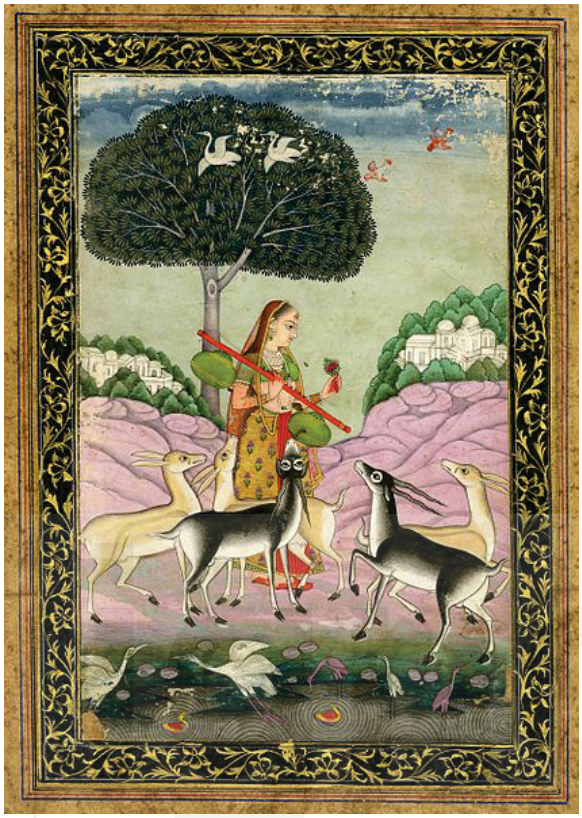

चित्र-9: टोडीरागिनी
साभार: https://commons.wikimedia.org//wiki/File:An_illustration_of_Todi_Ragini_from_a_Ragamala_series_ca._1750_Jaipur_British_Museum._London.jpg

उत्तर भारत का संगीत मुख्यतः भक्ति आंदोलन से प्रभावित था। 16वीं शताब्दी के संत कवियों की रचनाएं अधिकांशतः संगीत पर आधारित होती थीं। स्वामी हरिदास ने वृंदावन में संगीत को खूब बढ़ावा दिया। उन्हें अकबर के प्रसिद्ध दरबारी संगीतकार तानसेन का गुरू भी माना जाता है। तानसेन स्वयं उत्तर भारतीय संगीत का महान उद्गाता था। उसे मियां की मल्हार, मियां की तोडी और दरबारी जैसे कुछ प्रमुख रागों का जन्मदाता माना जाता है। ग्वालियर के राजा मान सिंह (1486–1517 ई.) ने उत्तर भारत के संगीत की एक प्रमुख शैली ध्रुपद के विकास और परिष्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

18वीं शताब्दी में मुगल सम्राट मौहम्मद शाह के दरबार में संगीत की उत्तर भारतीय शैली को अद्भुत प्रोत्साहन मिला। उसके दरबार के दो संगीतकार, सदारंग और अदारंग ख्याल गायकी के महान प्रवर्तक थे। इसी समय तराना, दादरा और गजल जैसे संगीत के नए रूप सामने आए। इसके अतिरिक्त दरबारी संगीत में लोक संगीत को भी शामिल किया गया। इस श्रेणी में ठुमरी और टप्पा का उल्लेख किया जा सकता है। ठुमरी में लोक संगीत के मानदंडों का उपयोग होता है और टप्पा पंजाब के ऊँटवानों द्वारा गाये जाने वाले संगीत से विकसित हुआ।

एक बात गौर करने की है कि दक्षिण भारतीय संगीत काफी कुछ नियमबद्ध और ग्रंथाधारित था, परन्तु उत्तर भारतीय संगीत में इस परम्परा का अभाव होने से इसमें काफी स्वच्छंदता पाई जाती थी। इस कारण उत्तर भारत में विभिन्न रागों को मिलाकर अनेक प्रयोग किए गए। आज भी उत्तर भारतीय संगीत में यह उदारता मौजूद है।

14.6.2 नृत्य और नाटक

मध्यकालीन नृत्य और नाटक के संबंध में तत्कालीन ग्रंथों में बहुत कम वर्णन मिलता है। संगीत, नृत्य और नाटक तथा सृजनात्मक साहित्य की प्रमुख पुस्तकें भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में मुख्य स्रोत के रूप में उपलब्ध है।

इससे संबंधित पुस्तकें मुख्य रूप से उड़ीसा, दक्षिण भारत और मुगल मौहम्मद शाह के दरबार में संग्रहित की गई। उड़ीसा में 17वीं शताब्दी के दौरान महेश्वर महापात्र और रघुनाथ द्वारा क्रमशः दो पुस्तकें *अभिनय चंद्रिका* और *संगीत दामोदर* की रचना की गई। दक्षिण भारत में *आदि भारतम*, *भारत रत्नव*, तुलाजराजा (1729–1735 ई.) कृत *नाटयवेदागम्* और बालराम बरमन (1753–1798 ई.) कृत *बलराम भारतम्* प्रमुख ग्रंथ हैं। मौहम्मद शाह के दरबार में नृत्य और संगीत पर *संगीत मलिका* नामक ग्रंथ लिखा गया।

बोध प्रश्न 2

1) 17वीं शताब्दी के दौरान मुगल चित्रकला में हुए विषयगत परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) मुगल चित्रकारों ने यूरोपीय चित्रकला के किन–किन भावों को अपनाया?

.....

.....

.....

.....

14.7 सारांश

इस इकाई में आपने मुगलों के अधीन चित्रकला और ललितकला के विकास का अध्ययन किया। इस कला की कलाओं में कई प्रकार के तत्वों का मिश्रण हुआ। चित्रों में ईरानी प्रभाव के साथ–साथ देशी परम्पराओं का भी उपयोग हुआ। 17वीं शताब्दी के दौरान इस पर यूरोपीय चित्रकला का भी प्रभाव पड़ा।

संगीत, नृत्य और नाटक को भी राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। तानसेन ने अकबर के दरबार की शोभा बढ़ाई और संगीत को असीम ऊंचाई तक पहुंचा दिया। तुलनात्मक दृष्टि से इस काल में नृत्य और नाटक का विकास आरंभिक अवस्था में था।

14.8 शब्दावली

भित्ति चित्र : दीवार पर बने चित्र।

पट्टिका : चित्रकारी के लिए चित्रकार द्वारा रंग रखने और मिलाने के लिए उपयोग की जाने वाली चौकोर पट्टिका।

आरेख : रेखा चित्र।

मुलम्मासाज : चित्रों के ऊपर सोने की एक लगभग पारदर्शी परत चढ़ाने वाले।

छवि चित्रण : विशिष्ट व्यक्तियों के चेहरे अथवा आदमकद शरीर का चित्रण।

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखे उपभाग 14.2.2

2) देखे उपभाग 14.3.1

3) देखे उपभाग 14.3.3

बोध प्रश्न 2

1) देखे उपभाग 14.4.2

2) प्रभामंडल, परों वाले देवदूत और गरजते बादल। देखे भाग 14.5

इस इकाई के लिए कुछ उपयोगी अध्ययन सामग्री

Basham, A.L. (ed.). 1975. *Cultural History of India.* Oxford: Oxford University Press.

Beach, M.C. 1982. *Mughal and Rajput Paintings*, Cambridge: Cambridge University Press

Brown Percy. 1942/1981. *Indian Architecture* (Islamic Period). 7th Reprint of the 1956 edition. Bombay: D. B Taraporewala Sons & Company. Pvt-Ltd.

Qaisar, A.J. 1982. *Indian Response to European Technology & Culture*. New Delhi,: Oxford University Press.

Verma, S.P. 1978. *Art and Material Culture in the Paintings of Akbar's Court.* New Delhi: Vikas